BUNDELON KI UTPATTI SE PURVA BUNDEL SHASHAK EVAM CHATRASAAL KA PRARAMBHIK JEEVAN

Name of Author : Dr. Sushma Rani
Designation of Author : Assistance Professor
Name of Department : History
Name of organization: Pt. Jawahar Lal Nehru Govt. College, Faridabad.

बुंदेलों की उत्पत्ति :– मध्यकालीन भारत का इतिहास राजपूत युग से प्रारंभ होता है । राजपूत देष के भिन्न–भिन्न भागों में अलग–अलग नामों से जाने जाते हैं । इनकी एक षाखा बुंदेलों के नाम से जानी जाती है ।

बुंदेलों की उत्पत्ति के संबंध में अनेक दंत कथाऐं प्रचलित हैं । परन्तु उनकी प्रमाणिकता में अब भी संदेह है । बुंदेल अपनी उत्पत्ति अयोध्या के महाराजा रामचन्द्र के पुत्र कुष से बतलाते हैं । इस प्रकार ये सूर्यवंषी क्षत्रिय कहलाये ।

ऐसा प्रचलित है कि सन् 674 ई0 में इस वंष के राजा सिंह राज के पुत्र कृतराज ने अपनी राजधानी काषी में स्थापित की । जिससे ये काषविद गहरवार कहलाये । कृतराज की बीसवीं पीढ़ी में करनपाल राजा हुए । करनपाल के बाद उनके पुत्र वीरभद्र की दो रानियां थीं । ज्येश्ठ रानी से चार पुत्र थे और छोटी रानी से एक, जिसे पंचम बुंदेलखण्ड या हेमकरण कहते हैं । छोटी रानी के पुत्र पंचम को वीरभद्र अधिक चाहते थे, इसलिए पंचम को उन्होंने अपना उत्तराधिकारी नियुक्त किया, परन्तु वीरभद्र की मृत्यु के पष्चात् उसके सौतेले भाईयों ने उसे निकाल दिया । प्राचीन लेखों में ऐसा वर्णन है कि पंचम निराष होकर मिर्जापुर की ओर चला गया । वहाँ विन्ध्यावासिनी देवी की षरण में जाकर तपस्या करने लगा। बहुत दिनों तक तपस्या करने के पष्चात् जब देवी प्रसन्न होती नहीं दिखाई दी तो हताष होकर पंचम ने अपने सिर की बलि देनी चाही । खून की एक बूंद ही निकली थी कि देवी ने प्रकट होकर वरदान दिया और कहा तुम्हारा पुत्र भी तुम्हारी तरह विजयी होगा और कीर्तिमान फैलायेगा ।

छत्रसाल से पूर्व बुंदेलों का षासक :–

दिल्ली के मुसलमान षासकों को इस भू–भाग पर अधिकार करने के लिए बुंदेलों से अनेक युद्ध लड़ने पड़े । एक के बाद दूसरे मुसलमान षासक बदले और प्रत्येक ने बुंदेल भू–भाग को अपने अधिकार में रखने के प्रयत्न किए, परन्तु बुंदेली षाही सेनाओं से डटकर मुकाबला करते रहे । मुसलमानों ने बुंदेलो में फूट डाल दी, जिससे वे अपनी इकाई न रख सके और फिर भी बुंदेलों ने अपनी स्वतंत्रता रखी ।

वीर सिंह देव :–

वीर सिंह देव अपने पिता के समान पराक्रमी था । वह अकबर का समकालीन था । वह अपनी भूमि को स्वतंत्र देखना चाहते थे । इसलिए उन्होंने स्वतंत्रता संग्राम जारी रखा । अकबर ने वीर सिंह देव को दबाने के लिए ग्वालियर के राजा आसकरन को सेना सहित भेजा । साथ ही उसने वीर सिंह के बड़े भाई रामषाह को जो अकबर के अधीन था एक फरमान भेजा कि वह आसकरण से मिलकर वीरसिंह से युद्ध करे । वीर सिंह अकबर से कभी पराजित नहीं हुआ तथा धीरे–धीरे अपनी सीमाओं का विस्तार करता रहा ।

वीर सिंह देव की मृत्यु 1628 ई0 में हो गई । वीर सिंह देव के 12 पुत्र थे, जिसमें जुझार सिंह सबसे बड़ा था । अतः यह राज्य का उत्तराधिकारी बना ।

जुझार सिंह :–

वीर सिंह के ज्येश्ठ पुत्र जुझार सिंह ने सन् 1628 ई0 में ओरछा की राजगद्दी ग्रहण की । वह बड़ा घमण्डी और षकी स्वभाव का था । उसने अपने छोटे भाई हरदौल को रानी द्वारा विशपान कराया था ।

एक बार जब जुझार सिंह मुगल सेना द्वारा घेर लिए गए, उस समय उसके परिवार की स्त्रियां और बच्चे भी उनके साथ थे । उसने महिलाओं को मुगलों से अपमानित किए जाने के भय से उन्हें मारना ही उचित समझा । जैसे ही जुझार सिंह अपनी स्त्रियों को मारने वाला था, कि मुगल सैनिकों ने आक्रमण कर जुझार सिंह और उसके पुत्र को मार भगाया और उसकी रानियों तथा अन्य पुत्रों को (विक्रमाजीत के अतिरिक्त जो जुझार सिंह के साथ भाग गया) बंदी बना लिया, इन्हें षाही हरम में अपमानजनक जीवन व्यतीत करना पड़ा ।

सम्राट के आदेषानुसार ओरछा की राजगद्दी देवी सिंह को सन् 1635 ई0 में सौंपी । देवी सिंह ने दो वर्श तक ओरछा में राज्य किया परन्तु वह षांति स्थापित नहीं कर पाया । बुंदेले सरदारों ने देवी सिंह के षासन का विरोध किया, जिसके फलस्वरूप जुझार सिंह का छोटा पुत्र पृथ्वीराज गद्दी पर बैठाया गया । वह

नाबालिग था, जिससे राज्य का कार्यभार चंपतराय की संरक्षता में चलता रहा । चंपतराय ने षाही कर देना बंद कर दिया। इसके नेतृत्व में बुंदेलखण्ड ने काफी सम्मान अर्जित किया ।

अंत में 1661 ई0 में चंपतराय को धधेरे सैनिकों ने मार डाला तथा उसका सिर काटकर 6 नवम्बर, 1661 ई0 में औरंगजेब के सम्मुख उपस्थित कर दिया ।

सुजान सिंह (1663–1672 ई0) :–

ओरछा के राजा पहाड़ सिंह के सुजान सिंह और इंद्रमणि नामक दो पुत्र थे। पहाड़ सिंह की मृत्यु के पष्चात् 1653 ई0 में सुजान सिंह ने ओरछा की राजगद्दी संभाल ली। उसने भी अपने पिता की तरह सम्राट की सेवा की । औरंगजेब के साथ सुजान सिंह ने दक्षिण के युद्धों में भी भाग लिया ।

औरंगजेब के षासन काल में हिंदु विरोधी भावना से प्रेरित होकर हिन्दुओं के मन्दिरों को नश्ट करने का आदेष दिया गया । इस नये फरमान से सारे मुगल सरदारों ने हिन्दू मन्दिरों को नश्ट करना षुरू कर दिया । ग्वालियर के सूबेदार किदबई (किदई खाँ) ने ओरछा के प्रसिद्ध मंदिर को नश्ट करने के लिए ओरछा की ओर कूच किया ।

सुजान सिंह जो कि दक्षिण में था, यह समाचार सुनकर धर्म संकट में पड़ गया और जब उसे कोई मुसलमान विरोधी षासक नहीं मिला तो लाचार होकर अपने पिता के दुष्मन चंपतराय के पुत्र छत्रसाल से सहायता की याचना की ।

छत्रसाल उस समय बुंदेलखण्ड में स्वतंत्रता का झण्डा खड़ा कर रहे थे। सुजान सिंह की सहायता का वचन दिया तथा धर्म संकट से मुक्त कराया । सन् 1672 में सुजान सिंह की मृत्यु हो गई ।

इंद्रमणि (1672–1675 ई0) :–

सुजान सिंह निःसन्तान था । उसकी मृत्यु पष्चात् उसका छोटा भाई इंद्रमणि राजा हुआ। इंद्रमणि के राज्य काल में कोई विषेश घटना नहीं हुई । सन् 1675 ई0 में इंद्रमणि की मृत्यु हो गई ।

यषवंत सिंह (1675–1684 ई0) :–

इंद्रमणि के पष्चात् उसका ज्येश्ठ पुत्र यषवंत सिंह ओरछा की राजगद्दी पर बैठा। इसके षासनकाल में चंपतराय के पुत्र छत्रसाल ने मुगल सम्राट के विरूद्ध अनेकों अभियानों में मुगलों की षक्ति को कमजोर करने का प्रयास किया । यषवंत सिंह भी मुगल सम्राट के अधीनस्थ था और उसने सम्राट की छत्रसाल को रोकने में अपनी सहायता की। सन् 1684 में यषवंत सिंह की मृत्यु हो गई ।

भगवंत सिंह (1684–1689 ई0) :–

यषवंत सिंह की मृत्यु के पष्चात् भगवंत सिंह राजा हुए । नाबालिग होने के कारण राज्य का कार्यभार उसकी माँ गणेष कुँवारी के हाथ में था । यषवंत सिंह का विरोध छत्रसाल को अधिक खल गया । परिणामस्वरूप उसने ओरछा पर आक्रमण के लिए सेना सहित ध्यान नदी के पास पहुँचा । रानी कुँवारी ने छत्रसाल से अपने पुराने घर ओरछा की सुरक्षा की मांग की । छत्रसाल ने रानी की बात मानकर आक्रमण न करके रानी से संधि कर ली । उसी समय 1689 ई0 में भगवंत सिंह की मृत्यु हुई ।

उदित सिंह (1689–1737 ई0) :–

मृत्यु के समय भगवंत सिंह अविवाहित था । इसलिए रानी गणेष कुँवारी ने उदित सिंह को गोद लिया । यह हरदौल का प्रपौत्र था । उदित सिंह एक निर्बल षासक था, वह बाह्य आक्रमणों से राज्य की रक्षा न कर सका । जब तक रानी जीवित रही उसने राज्य की सत्ता को बड़ी कुषलतापूर्वक चलाया । उसके बाद उदित सिंह मुगल सम्राट की षरण में चला गया । सन् 1707 में औरंगजेब की मृत्यु हो गई और बहादुरषाह दिल्ली की राजगद्दी पर बैठा, उदित सिंह ने सम्राट की हिदमत कबूल की और वह दिल्ली में रहने लगा ।

उदित सिंह के षासन में ओरछा राज्य की सीमाऐं बहुत कुछ संकुचित हो गई, फिर भी वह दिल्ली के सम्राट की सेवा में सदैव उपस्थित रहा ।

निःसंदेह, उपरोक्त विवरण से स्पश्ट है कि बुंदेलखंड का छत्रसाल से पूर्व इतिहास, अत्यंत महत्वपूर्ण व गौरवपूर्ण है ।

मुगलों एवं अंग्रेजों के संबंल साम्राज्यों के तेज को निश्प्रभाव कर देने वाले चंपतराय, बीरबल, छत्रसाल, रानी लक्ष्मीबाई, रानी अवन्तीबाई, तात्यामेव मर्दन येव सिंह, बखतबली, किषोर सिंह, राम स्वरूप सिंह आदि जैसे बहुत रत्न बुंदेलखण्ड ने ही दिए हैं।

महाराजा छत्रसाल (4 मई, 1649 – 20 दिसंबर, 1731)

छत्रसाल भारत के मध्ययुग के एक प्रतापी योद्धा थे, जिन्होंने मुगल षासक औरंगजेब से युद्ध करके बुंदेलखण्ड में अपना राज्य स्थापित किया और 'महाराजा' की उपाधि प्राप्त की ।

बुंदेलखण्ड केसरी के नाम से प्रसिद्ध महाराजा छत्रसाल के बारे में ये पंक्तियां बहुत प्रभावषाली हैं –

इत यमुना, उत नर्मदा, इत चंबल, उत टोंस ।
छत्रसाल सो लरन की, रही न काहु होंस ।।

औरंगजेब से युद्ध :–

औरंगजेब छत्रसाल को पराजित करने में सफल नहीं हो पाया । उसने रणदुलह के नेतृत्व में 30 हजार सैनिकों की टुकड़ी मुगल सरदारों के साथ छत्रसाल का पीछा करने के लिए भेजी थी । छत्रसाल अपने रणकौषल व छापामार युद्ध नीति के बल पर मुगलों के छक्के छुड़ाता रहा । छत्रसाल को मालूम था कि मुगल छलपूर्ण घेराबंदी में सिद्धहस्त हैं। उनके पिता चंपतराय मुगलों से धोखा खा चुके थे । छत्रसाल ने मुगल सेना से इटावा, खिमलासा, गढ़ाकोटा, धामौनी, रामगढ़, कंजिया, मडियादो, रहली, दानगिरि, षाहगढ़, वंषाकला सहित अनेक स्थानों पर लड़ाईयाँ लड़ी । छत्रसाल की षक्ति बढ़ती गयी । बंदी बनाये गये मुगल सरदारों से छत्रसाल ने दण्ड वसूला और उन्हें मुक्त कर दिया । बुंदेलखंड से मुगलों का एक छत्र षासन छत्रसाल ने समाप्त कर दिया ।

छत्रसाल का राज्याभिशेक :–

छत्रसाल के राश्ट्र प्रेम, वीरता और हिन्दुत्व के कारण छत्रसाल को भारी जन समर्थन प्राप्त था । छत्रसाल ने एक विषाल सेना तैयार कर ली । इसमें 72 प्रमुख सरदार थे। वसिया के युद्ध के बाद, मुगलों ने छत्रसाल को 'राजा' की मान्यता प्रदान की थी । उसके बाद छत्रसाल ने 'कालिखर का किला' भी जीता और मंधाता चौबे को किलों का किलेदार घोशित किया। छत्रसाल ने 1678 में पन्ना में राजधानी स्थापित की । विक्रम संवत 1744 में 'योगीराज प्राणनाथ' के निर्देषन में छत्रसाल का राज्याभिशेक किया गया था ।

साहित्य संरक्षक :–

छत्रसाल साहित्य के प्रेमी एवं संरक्षक थे । कई प्रसिद्ध कवि उनके दरबार में रहते थे । कवि भूशण उनमें से एक थे, जिन्होंने 'छत्रसाल दषक' लिखा । इनके अलावा लाल कवि, बक्षी, हंसराज आदि भी थे ।

संदर्भ ग्रंथ सूची

अ. मूल स्त्रोत :

1. अबुल फजल, ''आइने अकबरी''
2. भीमसेन, ''तारीख–ए–दिलकषा''
3. साकी मुस्ताद खाँ, ''मासिर–ए–आलमगीरी''

ब. सहायक ग्रंथ एवं पुस्तकें

1. श्री वियोगी हरि छत्रसाल ग्रंथावली
2. डा. भगवान दास गुप्ता छत्रसाल बुंदेला
3. श्री नारायण तिवारी छत्रसाल विजय ऐतिहासिक प्रमाणावली में उपलब्ध
4. डा. वागीष षास्त्री बुंदेलखण्ड की प्राचीनता
5. डा. गोरेलाल तिवारी बुंदेलखण्ड का इतिहास
6. डा. महेंद्रप्रताप सिंह ऐतिहासिक प्रमाणावली और छत्रसाल